B- III
L- 09
M I H

आर्थिक नीतियाँ

- भू राजस्व बंदोबस्त
- कृषि का वाणिज्यीकरण
- कृषि के पिछड़ेपन के कारण
- उद्योगो के पतन के कारण और परिणाम
- आधुनिक उद्योगों का विकास
- परिवहन एवं संचार (रेलवे)
- धन का दोहन
- अकाल
- उपनिवेशवाद के तीन चरण

भू-राजस्व बंदोबस्त →
- स्थायी - 19% अंग्रेजों के प्रत्यक्ष शासन पर
- रयतवारी - 51% क्षेत्र पर
- महालवारी - 30% क्षेत्र पर

स्थायी बंदोबस्त :- जमींदारी / इस्तमरारी बंदोबस्त

पृष्ठभूमि :-
- 1757 में 24 परगना की जमींदारी कम्पनी को दी गई
- 1760 में वर्द्धमान, मिदनापुर और चटगांव की

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

जमींदारी दी गई।

- 1765 ई. में बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी अधिकार कम्पनी को दिया गया।
- 1772 में पांच वर्षों के लिए भू-राजस्व वसूली के अधिकार को नीलाम किया गया।
- 1777 में प्रतिवर्ष भू-राजस्व वसूली के अधिकार को नीलाम किया जाने लगा।
  इजारेदारी डेके पर राजस्व वसूली
- 1790 में 10 वर्षों के लिए भू-राजस्व वसूली का अधिकार नीलाम किया गया और 1793 में इसे स्थायी कर दिया गया।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

तथ्यात्मक :-

- 1793 में कार्नवालिस के द्वारा इसे लागू किया गया था
  बंगाल, बिहार, उड़ीसा और बनारस के कुछ भागो तक (लगभग 19% क्षेत्र)

विशेषता :

- इस बंदोबस्त के अन्तर्गत समस्त भूमि का मालिक जमींदारों को माना गया और

मालिकाना हक वंशानुगत एवं हस्तांतरणीय बना दिया गया।

- सरकार को भू-राजस्व की अदायगी जमींदारों के द्वारा की जायेगी।
- मालिकाना हक के साथ एक शर्त यह जुड़ी हुई थी कि निर्धारित तिथि पर निपत राजस्व यदि सूर्यास्त से पहले जमा नहीं किया गया तो मालिकाना हक सरकार छीन लेगी।
- भू-राजस्व का निर्धारण सरकार ने पिछले अनुभवों को देखते हुए और मनमाने तरीके से किया।
- अलग-अलग जमींदारों से भिन्न-भिन्न राशियों या भू-राजस्व की राशि निर्धारित की गई। लेकिन जो भी निर्धारित की गई उसका 10/11वां हिस्सा सरकार को देना होता था और एक हिस्सा जमींदारो के पास रह जाता था
- स्थाई बंदोबस्त में भू राजस्व के पुनः निर्धारण का प्रावधान नहीं था।
- प्राकृतिक आपदा के दौरान राहत का प्रावधान नहीं था।
- मूल कानून में किसानों एवं जमींदारो के बीच समझौते का प्रावधान था

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

लेकिन आगे चलकर कानूनों को संशोधित किया गया और किसानों को जमींदारों की दया पर छोड़ दिया गया।

कारण :-

सरकारी तर्क :-

- कृषि उत्पादकता में वृद्धि और जमींदारों एवं किसानों के लाभ को देखते हुए इसे लागू किया गया।

- वास्तविक कारण

आर्थिक कारण :-

- आय की स्थिरता एवं आय में वृद्धि के लिए
- इन पैसों की आवश्यकता थी भारतीय उत्पादों को खरीदने के लिए तथा भारतीय प्रशासन एवं सैन्य अभियान के संचालन में।

राजनीतिक कारण :-

- जमींदार के रूप में एक राजनीतिक सहयोगी की आवश्यकता, न केवल भू-राजस्व वसूली के लिए बल्कि ग्रामीण भारत में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए और अंग्रेजों के प्रति उभरते हुए असंतोष एवं दमन के लिए।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

• प्रशासनिक अनुभव की कमी तथा प्रत्येक किसानों से भू राजस्व वसूलने में प्रशासनिक खर्चे बढ़ जाते थे।

प्रभाव :- सरकार, जमींदार एवं किसानों पर

सरकार पर प्रभाव :-

सकारात्मक :

जिन वास्तविक उद्देश्यों को ध्यान में रखकर सरकार ने बंदोबस्त को लागू किया उसमें एक बड़ी सीमा तक सरकार को सफलता मिली जैसे- आय की स्थिरता, प्रशासनिक खर्चों को सीमित रखना, राजनैतिक सहयोगी के रूप में जमींदार इत्यादि।

नकारात्मक :

• सरकारी राजस्व में वृद्धि की संभावना नहीं।
• किसानों का बड़े पैमाने पर शोषण हुआ और इन क्षेत्रों में नागरिक विद्रोह एवं किसान विद्रोह का कारण बना
• आगे चलकर किसानों के बीच राष्ट्रीय चेतना का भी उदय एक महत्वपूर्ण कारण बना।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

जमींदारो पर प्रभात :

नकारात्मक :-

- भू राजस्व वसूली की कठोर शर्तों के कारण प्रारम्भ के 15 वर्षों के भीतर लगभग आधे जमींदारो से जमींदारी अधिकार छीन लिए गए। इससे जमींदारो को आर्थिक नुकसान हुआ और सामाजिक प्रतिष्ठा को भी ठेस पहुँचा।

सकारात्मक :

- इस बंदोबस्त से जमींदारो को अधिकाधिक लाभ हुआ आर्थिक रूप से देखें तो भूमि पर मालिकाना हक में वृद्धि हुई सामुदायिक सम्पत्ति पर भी जमींदारो को नियंत्रण दिया गया और किसानों को जमींदारों की दया पर छोड़ा गया इन सब से जमींदारों की आय मे वृद्धि हुई।
राजनीतिक रूप से अंग्रेजों के सहयोगी होने के कारण समाज और प्रशासन पर उनका प्रभाव बढ़ा।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

किसानों पर प्रभाव :-

- किसानों की दृष्टिकोण से यह बंदोबस्त आर्थिक नुकसान देह एवं दुःखदायी रहा।
- भूमि पर मालिकाना हक छीन जाने से न केवल उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को ठेस पहुँची बल्कि अपनी ही भूमि पर किरायेदार बन गए।
- आर्थिक दृष्टिकोण से भी किसानों को व्यापक नुकसान हुआ और भूमि पर मालिकाना हक छीन जाने से और जमींदारों की दया पर रहने के कारण किसानों की आय कम हुई।
- सामुदायिक सम्पत्ति का उपयोग जमींदारो की अनुमति के बिना अब नहीं कर सकते थे इससे भी उनका जीवन प्रभावित हुआ।
- भू राजस्व का अत्याधिक दबाव, समय पर राजस्व को अदा करने का दबाव तथा प्राकृतिक आपदा में राहत न मिलने के कारण किसानों को कर्ज लेना पड़ा।

KGS IAS KHAN GLOBAL STUDIES Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- किसानों ने महाजनों या साहूकारों से कर्ज लिया एक बार कर्ज लेने के पश्चात महाजनों की पकड़ से बाहर निकलना मुश्किल था।

नोट :-

- इस बंदोबस्त के अन्तर्गत अनुपस्थित जमींदारों की संख्या बढ़ी।
- जमींदारों एवं किसानों के बीच बिचौलियों की संख्या बढ़ी।
- बंदोबस्त के कारण महाजनों की संख्या भी बढ़ी

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR